सूरह — एक कहानी

सूरह अर-रहमान

निहायत मेहरबान

पूरा सफ़र — एक एक नेमत —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 55 • 78 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अर्-रहमान। 'अल्लमल्-क़ुरआन। ख़लक़ल्-इंसान। 'अल्लमहुल्-बयान
1-4. रहमान ने, क़ुरआन सिखाया, इंसान को बनाया, उसे बोलना सिखाया।

अश्-शम्सु वल्-क़मरु बि-हुस्बान
5. सूरज और चाँद एक हिसाब से चलते हैं।

फ़-बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान
13. तो तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेमतों को झुठलाओगे?

कुल्लु मन 'अलैहा फ़ान। व यब्क़ा वज्हु रब्बिक ज़ुल्-जलालि वल्-इक्राम
26-27. हर वो चीज़ जो इस (ज़मीन) पर है फ़ना होने वाली है। और बाक़ी रहेगा तुम्हारे रब का चेहरा, जो जलाल और इज़्ज़त वाला है।

व लिमन ख़ाफ़ मक़ाम रब्बिही जन्नतान
46. और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरा, उसके लिए दो बाग़ हैं।

तबारकस्-मु रब्बिक ज़िल्-जलालि वल्-इक्राम
78. बरकत वाला है आपके रब का नाम, जो जलाल और इज़्ज़त वाला है।

वो नाम जो सब कुछ खोलता है

बेटा, आओ बैठो — आज की कहानी लंबी और ख़ूबसूरत है, जैसे मग़रिब के वक़्त एक बाग़ में सैर। ये सूरह इतनी महबूब है कि नस्लों ने इसे **क़ुरआन की दुल्हन** कहा है: निकाहों पर पढ़ी जाती, बच्चों को पहले सिखाई जाती, घरों की दीवारों पर सोने से लिखी जाती।

ये हर दूसरी सूरह से अलग खुलती है — **एक वाहिद नाम अपनी लाइन पर अकेला खड़ा**, जैसे कोई बादशाह अपने जुलूस से पहले दाख़िल हो: **अर-रहमान।**

ये नाम क्यों? पस-मंज़र सुनिए। जब नबी ﷺ ने क़ुरैश से कहा, 'अर-रहमान को सजदा करो,' उन्होंने झूटी ला-इल्मी से जवाब दिया: '**और अर-रहमान क्या है?**' ये पूरी सूरह, उलमा कहते हैं, उस सवाल का शानदार जवाब है। तुम पूछते हो अर-रहमान

कौन है? तो किसी तारीफ़ को मत सुनो — **उन्हें काम करते देखो।** और अठहत्तर आयतों तक, सूरह अर-रहमान को करते हुए दिखाती है: सिखाते, बनाते, तौलीन करते, रिज़्क़ देते, फ़ैसला करते, अज्र देते। **तुम नाम को उसकी नेमतों की बारिश से पहचानोगे।**

तोहफ़ों की तरतीब

अब पहली चार आयतें एक सीढ़ी के चार ज़ीनों की तरह देखिए: '**अर-रहमान — क़ुरआन सिखाया — इंसान बनाया — उसे बयान (बोलना और इज़हार) सिखाया।**'

तरतीब पर रुकिए, बेटा, क्योंकि ये एक पूरा अक़ीदा लिए हुए है। **क़ुरआन की तालीम इंसान की तख़्लीक़ से पहले ज़िक्र की गई।** गोया अल्लाह कह रहे हों: **ये किताब आपकी ज़िंदगी में जोड़ी गई कोई ज़ाएद चीज़ नहीं; आपकी ज़िंदगी इस किताब के लिए बनाई गई।** दुनिया के कारख़ानों में, मैनुअल मशीन के बाद लिखी जाती है। अर-रहमान के साथ, **मैनुअल उसके इल्म में मशीन बनने से पहले मौजूद था** — आप इसे पाने के लिए बनाए गए।

और चौथा ज़ीना: उसने इंसान को '**अल-बयान**' सिखाया — वो मोजिज़ा जो आप ठीक इस सेकंड इस्तेमाल कर रहे हैं। तमाम मख़लूक़ में से, **सिर्फ़ आप एक जज़्बे को लफ़्ज़ों में लपेट कर दूसरे दिल में पोस्ट कर सकते हैं।** दो साल का बच्चा वो शुरू करता है जो कोई सुपरकंप्यूटर सच्ची तरह नहीं करता — **मानी**। ये किसने इंस्टॉल किया? और ग़ौर कीजिए: बोलने का तोहफ़ा ठीक क़ुरआन के तोहफ़े के बाद आता है — क्योंकि **सबसे बा-इज़्ज़त काम जो आपकी ज़ुबान कभी करेगी वो उसके अल्फ़ाज़ उठाना है।**

एक कायनात जो तवाज़ुन में खड़ी है

फिर अर-रहमान हमें अपनी वर्कशॉप दिखाते हैं। '**सूरज और चाँद बि-हुस्बान** — ठीक हिसाब से चलते हैं।' तक़रीबन नहीं, बेटा — इतना ठीक कि साइंसदान अगले सौ सालों की ग्रहण की टाइमिंग्स मिनट तक छाप देते हैं। **किस की पाबंद-वक़्ती पर वो

भरोसा कर रहे हैं?** 'और **सितारा** और **दरख़्त** — दोनों सजदा करते हैं।' ऊपर ना-पहुँच सितारा और आपकी गली का आजिज़ नीम — दोनों उसी रब के सजदे में, हर एक अपनी ज़ुबान में।

'और आसमान — उसने उसे **बुलंद** किया, और **अल-मीज़ान** — तराज़ू क़ायम किया।' और फिर, एक अनोखे अंदाज़ में, लफ़्ज़ **मीज़ान** दो आयतों में **तीन बार** हथौड़ा-नुमा आता है: उसने तराज़ू रखा... कि तुम तराज़ू में ज़्यादती न करो... तो इंसाफ़ के साथ वज़न क़ायम करो और तराज़ू में कमी न करो।

बेटा, **कहकशाओं के मदारों से ले कर एक सब्ज़ी-वाले की तराज़ू तक — सूरह एलान करती है कि ये एक ही क़ानून है।** वो दुकानदार जो अपनी तराज़ू झुकाता है वो कोई छोटा दुकान-जुर्म नहीं कर रहा; **वो कायनात की बनावट के ख़िलाफ़ खुरोच रहा है।**

'और **ज़मीन** — उसने उसे मख़लूक़ात के लिए बिछाया।' सिर्फ़ इंसानों के लिए नहीं — **अल-अनाम**, तमाम मख़लूक़ात के लिए। चिड़िया का इस फ़र्श में हिस्सा है, और चींटी का एक दर्ज-शुदा पता। उस पर: फल, खजूर के दरख़्त अपने ग़िलाफ़ों वाले गुच्छों के साथ, छिलके वाला अनाज, और ख़ुशबू-दार पौदे — **रैहान**। ख़ुशबू तक, बेटा — एक ऐसी चीज़ जिसमें कोई कैलोरी नहीं, ख़ालिस लुत्फ़ — अर-रहमान की सप्लाई-लिस्ट में आ गई। **ये ज़रूरत नहीं; ये मोहब्बत है।**

वो सवाल जो कभी दस्तक देना बंद नहीं करता

और अब, बेटा, उस जुमले पर आते हैं जो इस सूरह की धड़कन है — **इकत्तीस बार** दोहराया गया: '**फ़-बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान** — तो तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेमतों को झुठलाओगे?'

'तुम दोनों' — यानी **जिन्न और इंसान**, दोनों मुकल्लफ़ मख़लूक़ें। और नबी ﷺ ने ये सूरह जिन्नों की एक जमाअत के सामने पढ़ी और बाद में सहाबा से फ़रमाया: **मैंने ये जिन्नों के सामने पढ़ी और वो तुम से बेहतर जवाब देने वाले थे** — जब भी मैं 'फ़-बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान' पर पहुँचता, वो कहते: **'ला बि-

शै-इम्-मिन नि'अमिक रब्बना नुकज़्ज़िब, फ़-लकल्-हम्द'** — ऐ हमारे रब, हम आपकी किसी नेमत को नहीं झुठलाते, तो सारी तारीफ़ आपकी है!

बेटा, इसे सीख लीजिए और ख़ुद भी कहिए। **तिलावत को गुफ़्तगू में बदल दीजिए।**

और यहाँ एक बारीक बात जो उलमा निशानदेही करते हैं: **ये जुमला तंबीह और जहन्नम के बयान की आयतों के बाद भी आता है।** अज़ाब कैसे एक 'नेमत' है? क्योंकि **किनारे से पहले तंबीह का बोर्ड एक रहमत है** — हर अलार्म जो अर-रहमान बजाते हैं वो उनकी मेहरबानी है जो हमें गिरने से पहले जगाने की कोशिश करती है।

हर चीज़ फ़ना — वो बाक़ी

तोहफ़ों के बीच, सूरह अचानक एक के सिवा सारी बत्तियाँ बुझा देती है: '**कुल्लु मन 'अलैहा फ़ान** — ज़मीन पर जो भी है फ़ना होने वाला है। और तुम्हारे रब का **चेहरा** बाक़ी रहेगा — **ज़ुल्-जलालि वल्-इक्राम**, जलाल और इज़्ज़त वाला।'

हर नेमप्लेट पर हर नाम, बेटा। हर सल्तनत, हर ट्रेंडिंग मशहूर शख़्स, हम में से हर एक जो ये सतरें पढ़ और लिख रहा है। **फ़ान** — गुज़रने वाला। **सिर्फ़ वो बाक़ी।**

अजीब बात है, ये कोई मायूस करने वाली आयत नहीं; ये सूरह की सबसे क़रार देने वाली आयत है। ये आपको सिखाती है कि **अपनी उम्मीदों का घर कहाँ न बनाओ** — उन लोगों और चीज़ों पर जो ख़ुद घुल रही हैं — और कहाँ लंगर डालो: **उस में जो बाक़ी रहता है।**

और फिर एक जौहर: 'आसमानों और ज़मीन में हर कोई उस से **माँगता** है। **कुल्ल यौमिन हुव फ़ी शान** — हर रोज़ वो किसी न किसी काम में है।' हर एक दिन, अर-रहमान किसी गुनहगार को बख़्श रहे हैं, किसी मुसीबत को दूर कर रहे हैं, किसी क़ौम को बुलंद कर रहे हैं, किसी दिल को शिफ़ा दे रहे हैं, किसी ख़ौला को जवाब दे रहे हैं, किसी का रिज़्क़ लिख रहे हैं। **उनका दफ़्तर कभी बंद नहीं होता, बेटा। ** कल उनके दरवाज़े पर मिलने वाला इनकार आज में नहीं आता — **हर रोज़, वो

ताज़ा शान में हैं। फिर दस्तक दो।**

आसमान के किनारों पर चैलेंज

फिर अर-रहमान दोनों क़ौमों को एक खुला चैलेंज देते हैं जो हर सदी के साथ और हैरत-अंगेज़ होता जाता है: 'ऐ **जिन्न** और **इंसान** के गिरोह! अगर तुम आसमानों और ज़मीन के **किनारों** से पार निकल सकते हो — तो निकल जाओ! **तुम न निकल सकोगे मगर सुल्तान** — इख़्तियार, ताक़त के साथ।'

इंसान तब से चाँद छू चुका है, बेटा — और आयत को बिल्कुल सच पाया: **ज़मीन से एक इंच भी पार न हुआ मगर 'सुल्तान' के साथ** — बे-इंतिहा ताक़त, हिसाब और इजाज़त के साथ जो उन क़वानीन में बुनी हुई है जो अर-रहमान ने ख़ुद लिखे।

और सूरह हमें उस दिन की याद दिलाती है जब कोई रॉकेट काम न आएगा: जब आसमान फट जाएगा और जलते तेल की तरह **गुलाबी सुर्ख़** हो जाएगा, जब मुजरिम अपनी निशानियों से पहचाने जाएँगे और पेशानियों और पाँव से पकड़े जाएँगे। **वही अर-रहमान जो रहमत फैलाते हैं उस दिन-ए-जलाल के भी मालिक हैं — उन से मोहब्बत करो, और उनकी ताज़ीम करो, साथ साथ।**

दो बाग़ — और दो और

और अब सूरह वो दरवाज़े खोलती है जिनकी तरफ़ वो हमें ले कर चल रही थी। '**व लिमन ख़ाफ़ मक़ाम रब्बिही जन्नतान** — और जो अपने रब के सामने **खड़े होने** से **डरा**, उसके लिए **दो बाग़** हैं।'

दाख़िले का टिकट पकड़िए, बेटा: पुलिस से डरना नहीं, लोग-क्या-कहेंगे से डरना नहीं — **उस मक़ाम से डरना**, अपने रब के सामने खड़े होने का वो लम्हा। जिसने वो खड़ा-होना अपनी आँखों के सामने रखा — और इसलिए वो गुनाह रोक लिया जो उसके हाथ आसानी से ले सकते थे — **उसे एक नहीं बल्कि दो बाग़ मिलते हैं।**

उनका बयान शहद की तरह टपकता है: शाख़ें दूर तक फैलीं; हर एक में, **दो बहते

चश्मे**; हर फल की, **दो क़िस्में**; तख़्त मोटे रेशम के दीबे से **अस्तर-दार** — और अगर **अस्तर** दीबा है, बेटा, तो बाहर का तसव्वुर करो; फल इतना नीचे झुका कि टिकाए हुए की तरफ़ ख़ुद झुक जाए; और पाक साथी, लाल-ओ-मरजान जैसे।

और फिर वो सात लफ़्ज़ जो पूरे वुजूद की माशियात थामे हुए हैं: '**हल जज़ा-उल्-इह्सानि इल्लल्-इह्सान** — क्या **इहसान** का बदला **इहसान** के सिवा कुछ है?' **तुमने अपने रब को अपना बेहतरीन छुप कर और खुले आम दिया; वो लौटाते हैं इहसान पर इहसान।**

'और इन दोनों के **अलावा** — **दो और बाग़**': **मुद्हाम्मतान** — इतने सर-सब्ज़ के घनेपन से गहरे सब्ज़; दो चश्मे झाँकते हुए; फल और खजूर और अनार; बेहतरीन और ख़ूबसूरत साथी, ख़ैमों में महफ़ूज़ हूरें; सब्ज़ गद्दियाँ और नफ़ीस क़ालीन।

दर्जे पर दर्जे, बेटा — क्योंकि तक़वा वाले ख़ुद दर्जे पर दर्जे हैं; **अर-रहमान किसी का हक़ कम नहीं करते और जद्दो-जहद के हर दर्जे से मिलाते हैं।**

और फिर आख़िरी लाइन उस दायरे को बंद कर देती है जिसे पहली लाइन ने खोला था। ये **नाम** से शुरू हुई — अर-रहमान; ये उस नाम को अलविदा का बोसा देते हुए ख़त्म होती है: '**तबारकस्-मु रब्बिक ज़िल्-जलालि वल्-इक्राम** — बरकत वाला है तुम्हारे रब का **नाम**, जलाल और इज़्ज़त वाला।' **पूरी सूरह, बेटा, उसके नाम और उसके नाम के दरमियान जियी।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. क़ुरआन ज़िक्र में आपकी तख़्लीक़ से पहले है — अपने दिन के पहले ताज़ा मिनट उसे दीजिए, बचे-खुचे थके हुए नहीं।

2. जिन्न की तरह जुमले का ज़ोर से जवाब दो: 'ला बि-शै-इम्-मिन नि'अमिक रब्बना नुकज़्ज़िब, फ़-लकल-हम्द।' तिलावत को गुफ़्तगू में बदलो।

3. हर मीज़ान की हिफ़ाज़त करो जिसे तुम छूते हो — तराज़ू, मार्क्स, काम के घंटे, फ़ैसले — तुम कायनात का अपना क़ानून थाम रहे हो।

4. उस में लंगर डालो जो बाक़ी रहता है: फ़ना होने वालों पर हल्का बनाओ, ज़ुल्-जलालि वल-इक्राम पर मज़बूत।

5. 'कुल्ल यौमिन हुव फ़ी शान' — हर रोज़ उसका दरवाज़ा ताज़ा है: कल की अनसुनी दुआ आज की ज़ेर-ए-ग़ौर फ़ाइल है, बंद नहीं।

6. मक़ाम से डरो, लोगों से नहीं — वो वाहिद ख़ौफ़ दो बाग़ों का टिकट है।

7. 'इहसान के बदले इहसान' जियो: नमाज़ में, काम में, ख़ानदान में — भेजा हुआ बेहतरीन बेहतरीन बन कर बरसता है।

या ज़ल्-जलालि वल-इक्राम, हमें उन में बनाइए जो आपके सामने खड़े होने से डरें — और हमें अपनी क़ुर्बत के बाग़ अता कीजिए। आमीन।